परमपिता के रूप में वे उनकी स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप नहीं करते; अपितु, उनकी मनोरथ-सिद्धि के लिए पूर्ण सुविधा की व्यवस्था करते हैं। यह जिज्ञासा हो सकती है कि सर्वशक्तिमान् श्रीभगवान् जीवों को यह प्राकृत-जगत् भोगने की सुविधा दे कर मायापाश में गिरने ही क्यों देते हैं। इसके उत्तर में यह उल्लेखनीय है कि यदि परमात्मा के रूप में श्रीभगवान् ऐसी सुविधा उपलब्ध नहीं कराते तो जीव की स्वतन्त्रता का कोई अर्थ नहीं रहता। इसलिए उन्होंने जीवमात्र को स्वेच्छानुरूप आचरण करने की पूरी स्वतन्त्रता दी है। परन्तु 'भगवद्गीता' में उनका अन्तिम आदेश यही है कि मनुष्य को अन्य सब कार्यों को त्यागकर पूर्णरूप से उनकी शरण में आ जाना चाहिए। इसी से वह सुखी हो सकेगा।

जीवात्मा और देवता, दोनों भगवान् की इच्छा के आधीन हैं। जीव न तो स्वेच्छापूर्वक देवाराधन कर सकता है और न ही देवता भगवत्-इच्छा के बिना उसे कोई वरदान दे सकते हैं। जैसा लोकप्रसिद्ध है, भगवान् की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। साधारणतया प्राकृत-जगत् में विपदा का मारा मनुष्य देवोपासना करता है, जैसा वैदिक शास्त्रों में निर्देश है। अमुक कामना के लिए अमुक देवताओं की उपासना करे, ऐसा विधान है। उदाहरणस्वरूप, रोगी को सूर्योपासना करनी चाहिए, विद्याकामी को विद्या की देवी सरस्वती का पूजन करना चाहिए, तो सुन्दरी स्त्री की अभीप्सा वाला भगवान् शिव की अर्धांगिनी उमा की आराधना करे। इस प्रकार शास्त्रों में अलग-अलग देवगणों की उपासना का विधान है। जीवमात्र अमुक-अमुक विशेष प्राकृत-सुख चाहता है। अतएव श्रीभगवान उसे तत्सम्बन्धी देवता से उपयुक्त वरदान प्राप्त करने की तीव्र उत्कण्ठा से प्रेरित करते हैं। इस प्रकार वह अभीष्ट वर की प्राप्ति में सफल हो जाता है। किसी देवता में जीव के भक्तिभाव का विधान भी श्रीभगवान् करते हैं, देवता स्वयं जीवों को ऐसी बन्धुता से भावित नहीं कर सकते। जीवमात्र के हृदय में परमेश्वर अथवा परमात्मा रूप से बैठे श्रीकृष्ण ही जीव को देवोपासना से लिए प्रेरित करते हैं। देवता तो केवल श्रीकृष्ण के विश्वरूप के भिन्न-भिन्न अंग हैं; उनमें स्वतन्त्रता का बिल्कुल अभाव है। वेद (तैत्तिरीय उपनिषद्, प्रथम अनुवाक) में उल्लेख है: परमात्मा रूपधारी श्रीभगवान् देवताओं के हृदय में भी हैं। अतएव वे ही देवताओं के द्वारा जीवों की इच्छा-पूर्ति का विधान करते हैं। इस प्रकार देवता और जीवात्मा स्वतन्त्र नहीं हैं; दोनों भगवान् की इच्छा के आधीन हैं।

**स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते।**
**लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्।।२२।।**

**सः** =वह; **तया** =उस; **श्रद्धया** =श्रद्धा से; **युक्तः** =युक्त हुआ; **तस्य** =उस देवता की; **आराधनम्** =उपासना; **ईहते** =करता है; **लभते** =प्राप्त करता है; **च** =तथा; **ततः** =उससे; **कामान्** =इच्छित भोगों को; **मया** =मेरे द्वारा; **एव** =ही; **विहितान्** =रचित; **हि** =निःसन्देह; **तान्** =उन।